भाषा आमंत्रण

मई - जुलाई 2021
अंक तृतीय

भविष्य अँधेरे में

सुना है केसेस बढ़ रहे हैं!

RNI Reg No. : HARHIN/2017/72144

यात्रा आमंत्रण का पुनः प्रकाशन और साथ ही इसी ग्रुप द्वारा खजूर की चटनी का शुभारंभ कार्यक्रम

यात्रा आमंत्रण का पुनः प्रकाशन और साथ ही इसी ग्रुप द्वारा खजूर की चटनी का शुभारंभ कार्यक्रम दिनाक 4 अप्रैल को दिल्ली में सम्पन हुआ। इस मौके पर मुख्यअतिथि विश्व विख्यात डॉ बिस्वरूप रॉय चौधुरी, अर्थशास्त्री श्री आदर्श धवन, श्रीमती आशा गंभीर, मुख्य संपादक बीस्वदीप, परामर्श संपादक मोहम्मद इस्माइल, कपिल अतरी और प्रताप सिंह ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराइ। इसके आलावा इजारा की दिल्ली, मुंबई और पुणे टीम से नितिन कलिजे, सुहासिनी, सादिया, भावना अत्रि और एलिजाबेथ भी शामिल रही।

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रभाव

अमरीका के 651 लखपतिओ की संपत्ति में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो लगभग 4 ट्रिलियन डॉलर है। ताइवान एक ऐसा देश रहा है जिसने कभी भी कोरोना को गंभीरता से नहीं लिया है। कंप्यूटर चिप्स उत्पादन में यह देश सबसे आगे है। महामारी के दौर में भी 42 प्रतिशत का उछाल निर्यात के क्षेत्र में देखा गया जो पिछले साल से 33 प्रतिशत अधिक है। 2020 – 2021 में एशिया में ताइवान आर्थिक गति में सबसे तेज रफ्तार वाला देश बना रहा।

बांग्लादेश का घरेलु गारमेंट उद्योग महामारी के दौर में भी निर्यात में तगड़े मुनाफे में रहा। इसी दौरान इस देश ने निर्यात में 80 प्रतिशत की उछाल दर्ज की जो अपने आप में एक मिसाल पेश करता है।

चीन की आर्थिक सुधर की रफ्तार इसी महामारी के दौर में 8 गुना अधिक दर्ज की गयी है ,

अमेजन और नेटफ्लिक्स जैसे कंपनी को इस महामारी में सबसे जयादा पैसा कमाने का मौका मिला। अमेजन का इस वक्त बाजार में 401 बिलियन डॉलर का प्रभुत्व है जिसके कारन यह नंबर एक पर है।

इजराइल में आर्थिक नुक्सान की वजह तालाबंदी नहीं रही। वह पर फलीस्तीन के संग चल रहे जंग मुख्या वजह रही। बाजार के जानकारों के अनुसार एक दिन की लड़ाई में 61 मिलियन डॉलर का नुक्सान इजराइल को हो रहा है।

अफ्रीका में कोरोना से इतना स्वास्थ्य सम्बन्धी नुक्सान नहीं देखा गया जितना आर्थिक नुक्सान। अफ्रीकी देशो में अभी भी जयादा मौते एबोला, मलेरिया, येलो फीवर और पोलियो के हो रहे है। इसके बाद मिस्र और टर्की में सकारात्मक वृद्धि आर्थिक विषयो में रही।

खाड़ी देशो में जहा पर तेल से सबसे जयादा मुनाफा होता है वह पर ईरान की स्थिति तालाबंदी में सबसे बेहतरीन रही। ईरान की वृद्धि दर 1.3 प्रतिशत रही।

Editorial Team

Chief Editor :
Biswadeep Roychowdhury

Consulting Editor :
Mohammad Ismail

Honourable Advisor:
Gaur Kanjilal
Executive Director at
INDIAN ASSOCIATION OF TOUR OPERATORS

Legal Advisor & UP Head:
Pratap Singh Chandel

Copy Editing :
Yash Bharwaj

Pune Head – Nitin Kalije
Delhi Head – Kapil Atari
IT Head – Shantanu Chauhan
Mumbai Head – Suhasini Sakir

Special thanks to
Dr Biswaroop Roychowdhury & Mr Shankar Korenga
Indian Association of Amusement Park and Industries and
Mr Anil Padwal

Publisher Address:
B 121, 2nd Floor, Green Field Colony, Faridabad , Haryana 121001

Mail us or included your name in our free copy circulation list – yatraamantran@gmail.com
Advt related queries / mail us at – biswadeep96@gmail.com

Visit us or download the pdf copy at www.yatramantran.com

मुख्य संपादक

बिस्वदीप रॉय चौधरी

संपादक की कलम से

मुझे वह दिन भी याद है जब एक दिन भारत बंद के घोषणा के साथ ही उस दिन के होने वाले आर्थिक नुक्सान कैसे अखबार की सुर्खिया बन जाती थी। एक दिन भारत बंद इतना गंभीर विषय रहा करता था की सरकार इस बंद और नुक्सान से बचने की हर संभव कोशिश करती थी। पर आज भारत बंद बड़ी मामूली से बात होकर रह गयी है। पहली लहर, दूसरी लहर या वेरिएंट या केसेस या सामाजिक दुरी या तालाबंदी, अब यह घर बैठ के गोदी मीडिया 24 घंटे सुना सुना के होने वाले आर्थिक नुक्सान को कही दरकिनार करना चाह रहा हो। पर एक आम जन मानस का भविष्य और वर्त्तमान दोनों असुरक्षित है और शायद ही कोई इस पर गंभीर चिंतन करना चाह रहा हो। तो भारत तरक्की की चिड़िया नहीं है , यह हम सब जानते है पर उन्नति के दौर में इसको अपाहिज कर दो , ऐसा पहली बार देखा गया है। तो 5 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी का सपना देखने वाले भारत ने दूसरी लहर के नाम पर कितना आर्थिक नुक्सान उठाया है , इस अंक के माध्यम से समझने की कोशिश की गयी है।

> सिनेमाघर के व्यापार को पिछले छ महीने में 9 हजार करोड़ का नुक्सान हो चुका है। अभी इस सेक्टर में दो लाख कर्मचारी रोजगार पा रहे है और ऐसे ही लाखो की आजीवका इसी से जुडी हुई है।

भारतीय राष्ट्रीय राज्यमार्ग प्राधिकरण ने टोल से मिलने वाले राशि में तकरीबन 2900 से लेकर 2200 करोड़ का नुक्सान हुआ है। टोल ऑपरेटर के लिए तालाबंदी नुक्सान लेकर आया है और उनका घाटा 3700 करोड़ तक रहा।

परामर्श संपादक

मोहम्मद इस्माइल

परामर्श संपादक की कलम से

दूसरी लहर ने देश के सभी विभागों की पोल खोल कर रख दी. स्वास्थ्य के नाम पर जो लूट हुई वह बहुत ही निन्दनीय रहा. कब्रस्तान और शमशान तक में धांधली और मुर्दों तक को नहीं छोड़ा गया. कहीं मुर्दों के बदन से कफन खेंचा गया, कहीं हमारे प्यारों को नदियों में बहाया गया. कहीं बाप अकेला अपनों की लाश अपने कमज़ोर कंधों से ढ़ो रहा था तो कहीं बेटियां अपने परिजनों का अंतिम संस्कार कर रहे थे जो कहीं दूसरे धर्म वाले यह धर्म निभा रहे थे. सरकार ने पूरी तरह से हाथ खड़े कर दिए थे. अस्पताल ऑक्सीजन, वेंटिलेटर के नाम पर लूट का नंगा नाच कर रहे थे. गरीबों के लिए अस्पतालों में बेड खाली नहीं थे,

जहां तक कारोबार का सवाल है वह पहले लॉकडाउन में ही बर्बाद हो गया था, दूसरी लहर ने कारोबारियों को घर में बिठा दिया. इतना जरूर है कि यह लॉकडाउन ज्यदा लंबा नहीं रहा लेकिन दूसरी लहर ने पूरे देश को डरा के रख दिया. गोदी मीडिया और मोदी सरकार का काम असंतोषजनक रहा. यह हम नहीं कह रहे है उनसे पूछे जिनके साथ इस कोरोना काल में हुआ. सरकारी सहायता किसकी हुई, कितनी हुई यह सरकारी के कागजी आंकड़ों पर कहां तक यकीन किया जा सकता है.

आज देश को ऊंची सोच वाले लोगों को सत्ता में पहुंचाने की बात होनी चाहिए जो देश के हर राज्य, हर नागरिक के बारे में काम करें. तथास्तु.

घन्यवाद!

जालंधर का खेल सामग्री उद्योग 2000 हजार करोड़ का है जो इस समय बेहद खस्ता हालत में है।

तालाबंदी का वैज्ञानिक पक्ष क्या है ?

दूसरी लहर के कारन दो राजधानी में दो महीने के लिए कारोबार में ताला लगा दिया गया।एक देश की राजधानी और दूसरा आर्थिक राजधानी। मार्च 2020 के बाद देश ने पहली बार जाना की बीमारी ऐसी भी हो सकती है की हम सबको घर में बैठना पड़ेगा। कारोबार करना या दफ्तर जाना मतलब सीधे सीधे बीमारी को न्योता देना होगा। पहली बार देश के प्रधानमत्री कहते है की सब काम धंधे छोड़ दो और घर में ताला लगा के बैठ जाओ। तीन महीने तक देश का नागरिक इस बात को मानता रहा या यु कहे की की उसे जबरदस्ती मनवाई गयी। पर यह शुरुवात थी और पूरी दुनिया में हो रहा था लिहाजा स्वीकृति भी इसी में समलित था। पर तालाबंदी का वायरस से क्या लेना देना है, इस पर न सवाल पूछे गए न प्रशासन की तरफ से कोई वैज्ञानिक सबूत पेश किये गए। पर तालाबंदी की यह पहली खिचड़ी तो देशवासिओ ने खा ली पर इसके बाद इसी तालाबंदी कई और खेप आना बाकि था। जैसे रात्रि तालाबंदी, सप्ताह अंत तालाबंदी, सुभह की तालाबंदी, दोपहर की तालाबंदी, शाम की तालाबंदी, और तो और दाए तरफ की दुकान और बाए तरफ के दूकान की तालाबंदी। मैंने गिना तो कुल 50 तरह के तालाबंदी की खिचड़ी परोसी और जबरदस्ती गले के निचे उतरी गयी। पर यह बताने का कष्ट किसी ने नहीं किया की आखिर इस तालाबंदी का वैज्ञानिक पक्ष क्या है ? है भी या नहीं। वायरस भी सोचता होगा की उसके उपस्थिति पर इतना गहन जानकार कौन आ गया है। बीमारी भले ही वैज्ञानिक या चिकित्सा के विषय पर हो पर उसके बहाने से लगने वाला तालाबंदी किसी भी तर्क सांगत कारणों के साथ नहीं दीखता है। तो जब तक आप सोचे की फिर तालाबंदी क्यों तब तक हम इस से होने वाले आर्थिक नुक्सान को आपके आगे रखते है।

देश की आर्थिक राजधानी का नुक्सान कुछ इस प्रकार

1.10 लाख करोड़ का नुक्सान महाराष्ट्र के व्यापारिओं का।

पुरे भारत को 12 लाख करोड़ का आर्थिक नुक्सान हुआ।

दिल्ली को 30 हजार करोड़ का नुक्सान

गुजरात को 60 हजार करोड़ का नुक्सान

उत्तर प्रदेश को 65 हजार करोड़ का नुक्सान

मध्य प्रदेश को 30 हजार करोड़ का नुक्सान

राजस्थान को 25 हजार करोड़ का नुक्सान

पुरे देश में 8 करोड़ व्यापारी है और अकेले महाराष्ट्र में कुल 15 लाख दुकाने बंद रही।

यह नुक्सान इतना बड़ा इसलिए भी है क्युकी तालाबंदी कई त्योहारो के बिच लगा। होली, अक्षय ततृत्य, रमजान, बुध पूर्णिमा, गुड़ी पड़वा, राम नवमी जैसे उत्सव लोग नहीं मना पाए। पिछले साल भी आम नागरिक इन त्योहारो को नहीं मना पाए। दरसअल हमारे देश में उत्सव का सीधा मतलब होता है की छोटे से छोटा व्यक्ति अपने लिए पैसा कमाता है। जब लगातार बात हो रही की बीमारी है तोएक गरीब के घर की जरूरत कैसे पूरी होगी, उस पर क्यों नहीं सोचा जा रहा है।

हर साल तकरीबन 10 हजार करोड़ के सोने का कारोबार अक्षय तृतय में होता है जो इस क्षेत्र के कारोबारी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। पर लगातार दूसरी बार गहने के व्यवसाय से जुड़े कारोबारी यह पैसा नहीं कमा पाए। इस में सबसे अधिक प्रभावित वह छोटे कारीगर है जो दैनिक आय पर जीवित है। उनके लिए क्या विकलप है। शायद ही किसी के ध्यान में आये। तकरीबन पुरे भारत में गहनों के वयवसाय से जुड़ेएक करोड़ परिवार है। लगातार दो बार के तालाबंदी में देश के 5 लाख व्यापारी सोने के कारोबार से जुड़े है, प्रभावित हुए है। सबसे बेहतरीन समय इस कारोबार का अक्षय तृतय और शादी का समय होता है जो की अप्रैल और मई के महीने आता है। इनके लिए अभी तक किसी प्रकार के आर्थिक पैकेज की बात नहीं की गयी है।

पिछले साल के मुकाबले इस साल के तालाबंदी ने ऑटो सेक्टर को भी तगड़ा झटका दिया है। गाड़िओ

के कई मुख्य कंपनी जैसे मारुती, महिंद्रा, टाटा मोटर्स, टोयटा ने माना की गाड़िओ की बिक्री में 70 प्रतिशत की गिरावट आई है। जहां पर 3.84 लाख गाड़िया मई के महीने में बिका करती थी वही इस साल सिर्फ अस्सी हजार तक ही बिक्री रही। कई ऑटो कंपनी अपने विक्रेता को कई तरह की मदद भी दे रही है ताकि कारोबार के नुक्सान को सम्भाला जा सके।

अगर सब कुछ इसलिए किया जा रहा है की महामारी और लोगो के स्वास्थय के लिए जरूरी है तो सटीक कारणों का आभाव क्यों है। क्योंऐसा है की वायरस के बेहद ही अवैज्ञानिक उपाय को प्रयोग में लाया जाया है और उसे ही कारगार बताया जाता है। क्यों सरकार अपने किसी भी विज्ञप्ति में नहीं कहती है की तालाबंदी से कैसे महामारी रुकेगी। जाहिर सी बात है की वायरस कोई गब्बर सिंह तो है नहीं की उसने कोई नियम बनाया और उस पर न चलने पर गाँव वालो को क्षति पहुंचेगी।

राज्य चाहे कोई भी हो, कारोबार के नुक्सान पर बेपरवाह ही दिखे। पांच सितारा होटल हयत्त रीजेंसी ने जब मुंबई स्थित अपने होटल को अस्थाई रूप से बंद कर दिया क्युकी होटल चलए रखने हेतु रकम पुरे नहीं थे, तब वाकई यह माना जाने लगा की मुश्किलों में सब है। अतिथ्य उद्योग इस समय अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है और आकड़ो की माने तो होटल कारोबार को अब तकएक लाख करोड़ का आर्थिक नुक्सान हो चूका है। हिमाचल राज्य का हाल तो बहुत खस्ता है। यहाँ का पर्यटन तो घुटनो पर आ गया है। धर्मशाला के 1000 से ज्यादातर होटल बिकवाली के कगार पर आ चूका है। शिमला, मनाली और काँगड़ा का भी यही हाल है। बैंक के लोन की किसतएक बड़ी समस्या है। इनमे से जयादातर छोटे होटल पर ताला लग रहा है, जिसका सीधा मतलब यह की माध्यम वर्ग के लिए आगे सस्ते होटल के विकलप बहुत थोड़े रह जायेंगे। यानि अब या तो महंगे छुट्टिओ की आदत डाल लो या फिर घर बैठे रहो।

इसीलिए हम सिर्फ सरकार से यह कहते है की ५० तरह के जो तालाबंदी आपने इस देश पर थोपा है उसका वैज्ञानिक पक्ष भी देश को बता देते। आप यह बता देते की किसी के घर से बाहर न निकलने से वायरस का क्या लेना देना। वायरस के कौन से जानकर ने यह कहा है की शनिवार रविवार को घर में रहने से कोरोना नियंत्रण में रहेगा, कहा यह शोध हुआ है की दुकानों में ताला लगा देने से वायरस का संक्रमण नहीं फलेगा और कब तकऐसे ही तालाबंदी के नाम पर लोगो के रोजगार पर विराम लगता रहेगा।

पहली बार देश में लोकल ट्रैन में सवारी गैर कानूनी हुआ। मुंबई में अप्रैल और मई महीने में 13.65 लाख रुपए 2725 यात्रिओ से वसूला गया। इनका कसूर यह था की पेट की खातिर नकली पहचान पत्र बनाके ऑफिस जाने के लिए यात्रा कर रहे थे क्युकी राज्य सरकार ने कोरोना का हवाला देकर तकरीबन डेढ़ साल से ट्रैन आम मुम्बईकरो के लिए बंद कर दी। जबकि यही ट्रैन सरकारी कर्मचारीओ के लिए बेधड़क चालू है।

Hunza Tea
DRINK TO YOUR HEALTH
Hunza Tea
An Ayurvedic Product
चाय नहीं → हुंजा टी (Hunza Tea)
सेहत के लिए आदत बदलो
Hunza Tea leaves consist of natural ingredients, namely holy basil, mint, cardamom, cinnamon and ginger. These ingredients have never been processed with chemicals, additives or preservatives. This natural drink forms an essential part of the diet of the Hunza people.
Hunza Tea
An Ayurvedic Product
Hunza Tea™
76 Cups of Hunza Health
MRP 350/-
(incl. of all taxes)
76 Cups of Hunza Health
Buy online at www.biswaroop.com/shop | Call: +91-9312286540

बेरोजगार भारत

तब आप क्या कीजियेगा जब देश के नागरिक के पास रोजगार नहीं होगा और वह दर दर की ठोकरे खा रहा होगा। चुनाव में माननीय मंत्रीओ के मुँह से रोजगार के प्रवचनऐसे छूटते है जैसे साक्षात् देवता आकाशवाणी से सत्य वचन की वर्षा कर रहे हो। पर चुनावी चिड़िया जब उड़ जाती है तब दीखता है झूठे वादों का गिद्ध जो आपके जीवन सेएकएक खुश के पल नोच नोच के समापत करने को आमादा हो। पिछले साल हमारी सरकार को येन केन प्रकारेण सिर्फ सबको घर में बिठाने की जलबाजी थी। सो लगा दिया तालाबंदी।ऐसा मुल्क ने कभी देखा नहीं की हमको दूकान न खोलने दिया जायेगा, दफ्तार नहीं जाने दिया जायेगा, सड़क पर घूमे तो पिछवारा लाल होगा, पर हुआ क्युकी हम ही तो दिए थे न वोट। पर जब सब बंद कर दोगे तो बेरोजगारी का अजगर तो बहार निकलेगा न। उसको कौन से तालाबंदी से बंद करोगे, तालाबंदी के शौकीन हुक्मरान यह भी बता देते। क्या है की फटा फट मास्क पहनो, थाली बजाओ, दुकाने बंद करो, फैक्टरी बंद करो, सुनो हमारी बात, बाकि पांच किलो चावल दे रहे है न, और क्या चाहिए, बहुत हुआ, अब घर में पदमासन करके मुँह बंद करके बैठ जाओ। बहार कोरोना का पिक्चर चालू है औरएलॉपथी का ट्रेलर बहुत जोर मार रहा है।ऐसा है की कोई नया कोरोना जिव डयनसूर की भाती आया है, उस से

अपनी जान बचा लो, बाकि भूख, गरीबी, बेरोजगारी से मरे तो कौन सी बड़ी बात। देश में गरीबी से मरो, भूख से मरो, पैसो की कमी से मरो, कौन पूछने आ रहा है। जब से भारत आजाद हुआ है तब से 30 प्रतिशत तो रोज ही मरते है। नहीं मरना है तो कोरोना से न मरो। इस पर इज्जत दाव पर लगी है। बाकि बीमारी से मरो तो भी कोई नहीं पर यह जो कोरोना है इसके भेट न चढ़ो तुम। पर कोरोना भी तेज निकला, न न करके भी लाखो को अपने साथ याम लोक लेकर गया।ऐसा सरकारी कागजो में लिखा है। क्या है की हमारे यहाँ सरकारी कागज सब तय करते है, कौन जिन्दा, कौन मारा, साक्षात इंसान थोड़े न मतलब का है। अब कोई गिनने तो गया नहीं की कितने कहा पर अलविदा कह गए। और गिने भी तो क्या, देश में गिनने को तो इतने समस्या है तो उसी का हिसाब पूरा नहीं पड़ता। पर कोरोना का खेल ही दूसरा है। आपातकाल भी लग गया। अब जुबान खुली तो समझो बड़ा गुनाह हो गया। मार्च 2020 के पहले मंदिर जाते थे, राम लल्ला से बतिया लेते थे, दुकान में घरवाली टिफिन का डब्बा लेकर खाना खिला जाती थी, फैक्ट्री में काम करके पगार लेकर बच्चो को खिलोने देते थे, नयी गाड़ी की किश्तों को समय से पहले ही पूरा कर देते थे, क्या है की नौकरी तो फेविकोल की तरह थी, कोई निकाल थोड़ी न सकता था, और हमारा खाने का दूकान, दूर दूर से लोग आते थे, हमारा पकवान होता ही इतना लजीज था। और बैंक में इतना बैलेंस की घरवाली दिवाली में कुछ मांगे, उस से पहले धर देते थे, बोलने कई कउनो मौका ही नहीं बा।

पर अब सुनो हाल। यह दिन अब सपने में आते है और सपने में ही खुश हो लेते है। आज की बात करे। पिछले साल 11 करोड़ लोग अपने नौकरी से हाथ पैर पिछवाड़ा सब धो बैठे। कोरोना का कमाल और चार घंटे के तालाबंदी का पहले गिफ्ट था। इस साल तो गिफ्ट और शानदार था। अप्रैल और मई महीने में 75 लाख लोग नौकरी से बहार हो गए यानि ऊँगली में गिने तो 3 से 4 करोड़ परिवार में यह केहर तो पक्का ही टुटा। पर कहानी अभी बाकि है। सेण्टर फॉर इकॉनमी ने तो इस से बड़ी गुड न्यूज दे दी। वह यह की 97 प्रतिशत भारतीय पिछले साल के मुकाबले और गरीब हो गए। यानि खाली जेब, ठन ठन गोपाल, समझे न, जिन लोगो केएक तारीख का इंतजार रहता था, की आज तो सैलरी आएगी,ऐसे साढ़े 50 लाख लोग नौकरी से ही बाहर हो गए। औरऐसा सिर्फ शहरो में नहीं हुआ।

शहर में तालाबंदी का खेला होबे तो हुआ पर गाओ में भी मामला अलग नहीं था। तकरीबन 21 लाख लोगो को दफतर जाने से ही छुट्टी मिल गयी। नौकरी ही नहीं तो दफ्तर का क्या करेंगे। और नौकरी गवा देने कीऐसी घोर निराशा कीएक करोड़ नब्बे लाख तो नौकरी ढूढ़ने की जेहमत तक नहीं उठाई। जब दफ्तर, फैक्ट्री, दूकान सब बंद है तो क्या अपना बायो डाटा ताले पर लटका के आते या वॉचमन को अपना इंटरव्यू देकर आते।

और 5 ट्रिलियन का जुमला तो याद ही होगा, अब वह तो जुमला था, जुमलों का क्या, पर कोरोना तो जुमला नहीं था,ऐसा गोदी मीडिया बता रहा है, तो इसी कोरोना बाबा की मेहरबानी से इस साल साढ़े तीन करोड़ परिवार गरीबी रेखा के निचे चली गयी। दुसरे भाषा में कहे तो भारत बेरोजगार भी हो गया और गरीब भी। अब जो विकास विकास चिल्लाये जरा उनके कान में फुक के आओ की भारत कितनी तेजी से रसातल में जा रहा है और कितनी तेजी से आर्थिक दिवालियेपन का सुपर हिट फिल्म बन जायेगा। बाकि बेरोजगारी जल्द आपका पीछा छोड़े,ऐसी आशा रहेगी।

मॉल के व्यवसाय के जुड़े करोबारिओ को इस साल के तालाबंदी से 3000 करोड़ का घटा सहना पड़ा है।

घाटे की नई उड़ान है हवाई जहाज व्यवसाय

कभी प्रधानमंत्री ने कहा था की देश में हवाई चप्पल वाला भी हवाई जहाज का सफर तय करेगा। देश में नए हवाई अड्डे बनाये जाने लगे ताकि छोटे शहर में तररकी की उड़न भर सके। यह वक्त था जब 1000 किलो मीटर की यात्रा को महज 3000 के निचे करने की कोशिश हुए ताकि एक आम आदमी भी इस हवाई यात्रा का हिस्सा बन सके। पर आज तालाबंदी ने इस हवाई उड़ान को जमीन पर लाकर बिठा था। आज देश के कई हवाई अड्डों में यात्री इसलिए भी नहीं जाते है क्युकी कोविद के नियमो के प्रतिबन्ध है। जैसे RTPCR टेस्ट और Quantine . हवाई यात्रा दरसअल पर्यटन के नजर से बेहद महत्व पूर्ण है। हर साल लाखो लोग गर्मिओ की छुट्टी में घूमने जाते है। पर इस सालऐसा नहीं हो सका। इस से पर्यटन उद्योग को तो नुक्सान हुआ ही पर घरेलू विमान उद्योग भी प्रभावित हुआ।

भारतीय विमान पतन प्राधिकरण के अनुसार नागरिक उड्यन कारोबार में 92 प्रतिशत की

गिरावट कमाई के मामले में देखि गयी है। आकड़ो में समझे तो अप्रैल से जून 2019 में जहा कमाई 2973 करोड़ था वही यह कमाई घट के 2020 में 239 करोड़ रह गयी। दुसरे शब्दों में उड्डयन सेक्टर को 25 हजार करोड़ का नुक्सान तालाबंदी और कोविद के कारण हुआ।

सिर्फ मार्च से मई के आंकड़े देखे तो 65 प्रतिशत यात्रिओ की गिरावट देखि गयी है। इन दो महीनो में सिर्फ 20 लाख लोगो ने सफर किया जो आम दिनों के मुकाबले 65 प्रतिशत कम है।

एयर इंडिया की कमाई में 79 प्रतिशत की गिरावट आई। वही हवाई अड्डे के संचालको की कमाई 84 प्रतिशत की गिरावट देखि गयी। स्पाइस जेट ने अप्रैल महीने में अपने कर्मचारीओ को 10 से 50 प्रतिशत वेतन कम दिया है। इसी तरह से सबसे बेहतरीन स्थान में रहने वाली Indigo का खजाना भी काफी खाली हुआ है। इनके मालिक अंकुर भाटिया की असामयिक मौत भी बेहद दुखद घटनाक्रम रहा है।

Indigo का आर्थिक नुक्सान – 1,147 करोड़

25 प्रतिशत का नुक्सान कमाई में घट कर हुआ 6,223 करोड़

कुल घाटा – 5,806 करोड़

कुल लाभ – 233 करोड़

सिडनी के CAPA ने अंदाजा लगाया है की इस साल कुल घाटा 4.1 बिलियन डॉलर रहेगा। जहाएक तरफ फुल करिंएर का घाटा 2.1 बिलियन डॉलर तक रहेगा वही लौ कॉस्ट करिंएर को 2 बिलियन डॉलर का नुक्सान उठाना पड़ेगा।

खैर इन आकड़ो सेऐसा लगता है हवाई चप्पल वाला तो पता नहीं हवाई जहाज की सैर करेगा की नहीं पर तालाबंदी काऐसा ही हिसाब चलता रहा तो निसंदेह हवाई जहाज वाला हवाई चप्पल में जरूर आ जायेगा।

> खाने की दूकान चलाने वाले व्यापारी की नौबत ताला लगाने की आ चुकी है। पिछले 14 महीनो के तालाबंदी के दौर में हॉस्पिटैलिटी सेक्टर को 1.30 लाख करोड़ का नुक्सान हो चूका है और तकरीबन 30 प्रतिशत दूकान सदा के लिए बंद हो चुके है। अकेले महाराष्ट्र में 15 लाख लोग बेरोजगार हो गए है।

भारत का नया मेन्यू : 166 ग्राम चावल लंच डिनर में

पूर्वी अफ्रीका काएक देश है इथियोपिया, उसकाएक शहर है टिगराय, वह पर इतनी भुखमरी है की खाने के लिए जंग चल रही है। मुझे याद आता है पिछला तालाबंदी, बिहार में बच्चे मेढक खा रहे थे क्युकी भोजन था ही नहीं। यह वही देश है जहा पर हर साल लाखो बच्चे कुपोषण की भेट चढ़ जाते है। 2017 के आकड़ो की माने तो 10 लाख बच्चे पांच साल की उम्र से पहले ही दुनिया छोड़ गए। 1943 में आजादी से ठीक दो साल पहले बंगाल में अकाल आया। कुल 30 लाख लोग बिना खाना भोजन के मारे गए। उस समय के ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल को इस अकाल के लिए दोषी माना गया। भारत वह देश है जहा का 25 प्रतिशत आबादीएक समय का भोजन ठीक से नहीं कमा पता है। यह वही देश है जहा पर 40 प्रतिशत आबादी झोपड़पट्टी में रहती है या यो कहे की बेहद ही अमानवीय हालत में. क्युकी रोजी रोटी का इतना संकट है की न ठीक से परिवार चल पता है न ठीक से रहने को घर मिल पता है। देश का 2 प्रतिशत आबादी देश के 98 प्रतिशत संसाधनों में कब्जा किये बैठे है। भारत की गरीबी पर विभूति भूषण बाधोपाध्या ने अपने उपन्यास में बखूबी लिखा और सत्यजीत रे ने उस पर फिल्मे बनाई। जिस देश में न तो ठीक से लोगो को दो वक्त का खाना मिलता है और ठीक से स्वाथय सेवा वह के नेता और सरकारी बाबुओ को तालाबंदी में बहुत रूचि है। अगर गौर करेंगे तो जो नेता आप पर तालाबंदी थोप रहे है वह कम से कम करोड़पति तो है ही। इस वक्त जो संसद में माननिये काबिज है उनमे से 67 प्रतिशत करोड़ पति है और

100 प्रतिशत को आ जीवन पेंशन मिलेगा। इसी तरह जो कमिश्नर तालाबंदी लगे इसको पुख्ता कर रहे है उन्हें सैलरी के आलावा गाड़ी बांग्ला नौकर चाकर और संतरी सब मुफ्त में मिलता है। दरसअल जो हमारे भाग्य विधाता बन रहे है वह हर केऐशो आराम में है।ऐसे में गरीब के घर में क्या चल रहा है इसकी कौन सुध लेगा।

पर सुध प्रधानमंत्री ने लिया और 80 करोड़ लोगो को पांच किलो चावल देने की बात कही। शायद इस देश में गरीब की कीमत ही इतनी है और जरूरत भी। और जो 5 किलो चावल तय कर रहा है वह अपने लिए और अपने माननिये के लिए 25 हजार करोड़ का सेंट्रल विस्टा तैयार कर रहा है।

जिस देश में पहले से ही खाने के लाले पड़े हो वह का हुक्मरान लोगो की जान बचाने निकला है वह भी उस स्वास्थय सुविधा के भरोसे जो अंतर राष्ट्रीय मनको में बांग्लादेश और कई दक्षिणी अफ्रीकी देश से भी पीछे है। चलिए मान भी लेते है की 5 किलो चावल बाटेंगे तो क्या वह हम तक पहुंचेंगे। सरकारी आकड़े बताते है की योजना तो जैसा की हमेशा से कागजो पर बराबर लागु होती है पर लाभार्थीओ तक नहीं पहुँचती है। 200 मिलियन यानि 20 करोड़ राशन कार्ड धारक को यह राशन मिला ही नहीं। जबकि सरकार कह रही है हम 1.5 लाख करोड़ का राशन बाटेंगे। और कहा जा रहा है 40 प्रतिशत लोगो तक यह राशन पंहुचा ही नहीं। तो यह राशन गया कहा।

जो देश का गरीब है उसके पास भूख मरी के आलावा शायद पांच किलो चावल है। पर जो देश का मध्यम वर्ग है उसका हाल भी जान लीजिये। इस वक्त यह वर्ग अपने गहने गिरवी रख के अपना काम चला रहा है। बैंको से जो आकड़े प्राप्त हुए है उसके मुताबिक इस साल 86 प्रतिशत ऋण सोना गिरवी रख के लिया गया है। यानि यह आकड़ो में देखे तो 60 हजार 484 करोड़ रुपए है। इंदौर के सराफा बाजार में हर सौ में से साठ व्यक्ति घर के जेवरात बेच रहा है ताकि घर का खर्चा चल सके। इसी तरह से क्रेडिट कार्ड से कर्ज लेने वाले आकड़ो में 17 प्रतिशत की वृद्धि देखि गयी है।

इसीलिए हम कह रहे है की भारत का नया भोजन का नया मेनू 166 ग्राम चावल है प्रति दिन। अब यह चावल तो कच्चा खाया नहीं जायेगा और गैस की मेह्गाई पूछिए मत, केरोसिन भी कहा मिलेगा और जंगल लकड़ी काटने तो जा नहीं सकते। तो चावल कैसे तैयार होगा। तोएक काम किया जा सकता है। आप रात भर इस चावल को पानी में भिगो के रखे, ठीक, सुभह यह फूल जायेगा, अब अगर आपके पास नमक और नीबू है तो इसमें डाल के मिला लीजिये। वार्ना इसेऐसे ही कच्चा खा लिए। प्रति व्यक्ति प्रति महीने ५ किलो यानि प्रति दिन कितना हुआ, जी 160 ग्राम। यही खाइये आप दिवाली तक, यह हम नहीं सरकार कह रही है। और कोई रेसिपी आपके पास है तो मुझे मेल पर बताये।

मोबाइल फोन उद्योग को अब तक तालाबंदी के कारन 15 हजार करोड़ नुक्सान हो चूका है। इस समय मोबाइल उद्योग में 268 कंपनी निर्माण के काम में लगी हुई है।

हाशिये पर पंहुचा अम्यूसमेंट पार्क का व्यापार

आज कल या यु कहे की पिछले 14 महीनो से बच्चेएक बात नहीं कहते है, कहके भी फायदा है नहीं, मार्च 2020 से पहले का वक्त था, थोड़ा पीछे ले जा रहे है आपको, आपको याद है हमारे भाजपा के पहले प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपाई जी ने नारा दिया था, स्कूल चले हम, कंधे में बैग लटकाये, छोटे छोटे नन्हे कदम स्कूल की घंटी के साथ शिक्षा के मंदिर की और दौर पड़े। ठीक 16 साल के बाद वापसएक और भाजपा का प्रधानमंत्री आया। उसने नारा दिया, स्कूल बंद करे हम, क्या है की वह कोरोना स्कूल के किवात पर बैठा है, गए तो खा लेगा। तो स्कूल के दर्शन घर से ही करो, ऑनलाइन शिक्षा। तो बाबूजी अब न हमको स्कूल छोड़ने जाते है न माई हमको कानऐठ के उठती है और स्कूल के लिए तैयार करती है। तो बचपन तो दो ही चीजो में गुजरता है,एक स्कूल के प्रांगण में और दूसरा बाबूजी से जिद करके मेला देखने जाये, पिकनिक मानने जाये, मॉल घुमा लाओ औरएक और चीज है, जन्मदिन है तो मांग भी स्पेशल बोले तो खास हो जाता है। इस बार हम वाटर पार्क में जायेगे। बड़ा बड़ा झूला मा बैठ के गोल गोल चाकरी में जोर जोर से चिल्ल्वा के खूब मजा लूटेंगे। अब बचपन इन दो चीजो के बैगैर ही है।

पर खैर कुछ वक्त घर बैठ लिए तो न तो आजीवन अशिक्षित रहेंगे और ना झूला कही जायेगा। पर भारत में इस वक्तएम्यूजमेंट पार्क का वयवसाय रसातल पर पहुच चूका है। मोटा मोटा देखे तो तकिरबान

१५०एम्यूजमेंट पार्क है जिसका सालाना व्यवसाय ४००० करोड़ का है। सबसे उम्दा समय होता है अप्रैल से जून का महीना। इस के बाद अक्टूबर से दिसंबर महीने में यह व्यसाय अपने चरम पर होता है।एक औसत अनुमान लगाए तो सालाना ३ करोड़ लोग मौज मस्ती और घूमने जाते है पर पिछलेएक साल से जयादा चले तालाबंदी ने 90 प्रतिशत व्यवसाय पर विराम लगा दिया है। इमेजिका जिसका औसत कमाई जहा 54 करोड़ के आस पास रहती थी वही घट के सिर्फ 5 करोड़ रह गया है। इसी तरह से वंडरला की कमाई 70 करोड़ से कम होकर 4 करोड़ के आस पास रह गयी है। चेन्नई के यूनिवर्सल किंगडम में जहा 50 हजार लोग आते थे वही अब सिर्फ 2000 ही आ रहे है। इस नुक्सान कीएक और वजह है तालाबंदी के बाद जब पार्क खोलने दिया गया तो शर्त थी की सिर्फ 50 प्रतिशत को ही अनुमति दी जाये। इस के आलावा पार्क में टिकट का उपलब्ध न होना भी । टिकट सिर्फ ऑनलाइन ही प्राप्त किये जा सकते थे।कोलकत्ता केएक्वेटिक थीम पार्क की माने तो रोजाना उन्हें 10 से 15 हजार का नुक्सान सरकार द्वारा थोपे गए कोविद नियमो से हो रहा है। जिसमेएक नियम यह भी है की दस से छोटे और 60 से जयादा उम्र के बुजुर्ग पार्क में नहीं आ सकते है। एम्यूजमेंट पार्क के लगातार घाटे में जाने से रोजगार की समस्या भी खड़ी हो गयी है। इस वक्त तकरीबन 75 हजार लोग इस पार्क वयवसाय से रोजगार पा रहे है। इसके आलावाएक अम्यूसमेंट पार्क उस इलाके में कई तरह रोजगार के मौके लाते है। आस पास के दूकान से लेकर ऑटोध्टैक्सीध बस से जुड़े लोग या फिर खाने पिने के दुकानदार।ऐसे हजारो और लोग है जो बेरोजगार और आर्थिक संकट से जूझ रहे है।

इस वक्त यह सेक्टर अपने सबसे बुरे दौर से गुजार रहा है और प्रवासी मजदूर के लिए मुश्किल घडी है। क्युकी तकरीबन 20 प्रतिशत कर्मचारी प्रवासी मजदूर है जो तालाबंदी के बाद अपने घर चले गए है जिस से पार्क को चलाये रखना और भी मुश्किल हो रहा है। जो आकड़े है वह बताते है की इस क्षेत्र में अब तक 1800 करोड़ का नुक्सान हो चूका है।

इंडियन एसोसिएशन ऑफएम्यूजमेंट पार्क के अध्यक्ष राजीव जालनपुरकर कहते है की अवकाश उद्योग का 40 प्रतिशत आयएम्यूजमेंट पार्क से आता है और छोटे शहर में यह नागरिको को रोजगार के मौके देता है। तकरीबन 3.5 लाख अप्रत्यक्ष रोजगार के मौके मिलते है। अभी हम चाहते है की सरकार इस उद्योग के लिए टैक्स के प्रावधानों में छूट दे और इस क्षेत्र को इंडस्ट्री का दर्जा प्रदान करे।

पिछले साल मार्च 23 से अप्रैल 27 के बीच एक सर्वे में सामने आया की 97 प्रतिशत प्रवासी मजदूर को सरकार की तरफ से किसी भी तरह का कोई राशन नहीं मिला है। इसमें उत्तर प्रदेश के 100 प्रतिशत मजदूर को कोई राशन नहीं मिला है। यहाँ तक की 70 प्रतिशत मजदूरों के पास केवल 200 रुपये थे।

RNI Number HRAHIN /2017/72144

DR. BISWAROOP ROYCHOWDHURY
International Renowned Medical Nutritionist

Truth-1 (ICMR Guideline)

Cases $\neq$ patients

Truth-2 (ICMR Guideline)

Every death = Corona death

N.I.C.E

क्या केसेस का मतलब पेशेंट बढ़ गये, नहीं, केसेस का मतलब पेशेंट नहीं है, केसेस का मतलब आज इतने और लोगो को बुद्धू बना दिया की आप कोरोना पेशेंट है।